[ISSN : 2348-2605]

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

(त्रैमासिक हिन्दी
एवं
सामाजिक विज्ञान
पत्रिका)

www.gejournal.net

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान
शोध पत्रिका
(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

E-mail: hindires@gmail.com

समायोजन – बाधायें एवं निराकरण के उपाय (माध्यमिक स्तर के छात्रों के संदर्भ में)

रेखा शर्मा
शोधार्थी, पीएच.डी. (एजूकेशन),
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

समायोजन एक निरन्तर चलने वाली वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति को अपने वातावरण से संघर्ष करके उसके अनुरूप ढालती है। प्रसिद्ध जीव शास्त्री डार्विन ने अपनी ब्योरी 'सरवाइवल ऑफ द फिटेस्ट' में कहा है कि ''प्रकृति में केवल उन्हीं व्यक्तियों की उत्तर जीविता होती है जो अपने वातावरण से संघर्ष करते हैं एवं सफल होते हैं ओर ऐसे व्यक्ति जो अपने आपको अपने वातावरण के अनुरूप ढाल नहीं पाते हैं वे नष्ट हो जाते हैं।'' इसलिए किसी भी प्राणी का अपने आप को अपने वातावरण के अनुकूल बनाना ही समायोजन कहलाता है।

वे सभी संस्थाएँ विशेष रूप से घर तथा विद्यालय जो कि बालक अथवा किशोर के विकास से सम्बन्धित है उन्हें बालक के उन पक्षों के विषय में विशेष रूप से जागरूक होना चाहिए जो उन महत्त्वपूर्ण कारकों को प्रदर्शित करते हैं, जो कि किसी बालक की सफलता को संतुष्ट व प्रभावित करते हैं।

कोई भी प्राणी जन्म से समायोजित अथवा कुसमायोजित नहीं होता है, प्राणी की शारीरिक, मानसिक एवं भावात्मतक योग्यताएँ उस वातावरण से अत्यधिक प्रभावित होती है जिसमें वह अपने आपको पाता है। वह उस वातावरण में धीरे–धीरे समायोजित अथवा कुसमायोजित होता है।

प्रत्येक प्राणी समायोजन चाहता है अर्थात् वह प्रयत्न करता है कि वह अपने आप को वातावरण के अनुसार ढाल सकें। समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई भी प्राणी अपनी आवश्यकताओं एवं जीवन की परिस्थितियों में संतुलन बना कर रखता है। कोई भी व्यक्ति सदैव अपनी इच्छाओं एवं प्रयत्नों के अनुसार सफल नहीं होता है, इसका कारण व्यक्ति की सीमित क्षमता अथवा विपरीत परिस्थियों हो सकती हैं फिर भी कोई भी व्यक्ति अपने आप को वातावरण में समायोजित करने का प्रयत्न करता है। इन प्रयत्नों में कभी तो वह पूर्ण रूप से सफल होता है तो कभी आंशिक रूप से। आंशिक रूप से आंशिक रूप से सफल होने पर वह फिर से समायोजन के दूसरे साधन खोजता है। जब वह अपने प्रयत्नों में असफल होता है तो वह अपने आप को समायोजित करने में भी असफल रहता है। इस परिस्थिति में इसका व्यावहार असामान्य हो जाता है, असामान्य व्यावहार उसकी चिंता अथवा मानसिक रोग की ओर संकेत करता है। इस शोध का विषय यही है कि अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राएँ किए प्रकार से अपने आप को भावात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक रूप से समायोजित करते हैं। इस समायोजन में उन्हें किस प्रकार की समस्याएँ आती है एवं इन समस्याओं का निराकरण किस प्रकार से किया जा सकता है।

अतः समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं एवं परिस्थितियों में सामंजस्य अथवा सन्तुलन बनाने का प्रयत्न करता है। समायोजन का विश्लेषण करने पर यह विदित होता है कि प्रत्येक व्यक्ति का एक लक्ष्य होता है। उसे प्राप्त करने में कई बाधाएं आती है, इन बाधाओं के कारण व्यक्ति कई प्रतिक्रियाओं के रूप में व्यावहार करता है। इन प्रतिक्रियाओं की सहायता से ही उन बाधाओं के निदान एवं हल तक पहुँचने में ही सफलता प्राप्त करता है। अर्थात् वह अपने आपको समयोजित करने में सफल रहता है।

समायोजन समस्याएँ –

समायोजन अपनी सीमित क्षमताओं एवं वातावरण में सामंजस्य का प्रक्रम है। यदि प्राणी अपने वातावरण की परिस्थितियों से सामजंस्य नहीं कर पाता है तो उसके मष्तिष्क में एक चिंता, एक बेचैनी उत्पन्न हो जाती है। यही चिंता अथवा बेचैनी ही समस्या का रूप ले लेती है। ये समस्याएँ तब उत्पन्न होती है जब व्यक्ति के लक्ष्य के मार्ग में बाधाएँ आती हैं– "ये बाधाएँ ही जो व्यक्ति को अपनी परिस्थितियों अपने वातावरण में समायोजित होने में रुकावट डालती है, ये ही समायोजन समस्याएँ कहलाती हैं। वे परिस्थितियाँ जो कि किसी प्राणी अथवा जीव को अपने वातावरण में समायोजन रहने में बाधा उत्पन्न करती है उन्हें ही

समायोजित समस्याएँ कहा जाता है। कोई भी प्राणी जन्म से समायोजित अथवा कुसमायोजित नहीं है। प्राणी की शारीरिक, मानसिक एवं भावात्मक योग्यताएँ उस वातावरण से अत्याधिक प्रभावित होती है, जिसमें वह अपने आप को पाता है। वह यह प्रयत्न करता है कि वह अपने आपको उस वातावरण के अनुसार ढाल सके और जब प्राणी अपने आपको उस वातावरण में नहीं ढाल पाता है तो यह कुसमायोजित हो जाता है। अतः समायोजित होने में जो परिस्थितियाँ अथवा बाधा उसके सामने उत्पन्न होती हैं ये बाधाएँ की समायोजन समस्यायें कहलाती हैं।

प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में सामंजस्य से सम्बन्धित अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। मनुष्य में ये समस्यायें सामाजिक उद्देश्य से सम्बन्धित होती है। लेकिन मनुष्य से अलग दूसरे प्राणियों में समायोजन की मुख्य समस्या भूख से सम्बन्धित होती है। यहाँ पर हम मनुष्य की समायोजन सम्बन्धी समस्या की बात कर रहे हैं। प्रत्येक व्यक्ति की कई इच्छाएँ होती हैं उनमें से कुछ वास्तविकताओं से जुड़ी होती है व कुछ काल्पिनिक होती हैं जिन्हें प्राप्त करना सम्भव नहीं होता है। इस परिस्थिति में व्यक्ति इन्हें वास्तविकता से जोड़ने का प्रयत्न करता है। अगर वह इन इच्छाओं को पूर्ण करने में सफल होता है तो वह समायोजित हो जाता है, लेकिन वह इन इच्छाओं को पूर्ण करने में असफल रह जाता है तो वह कुसमायोजित हो जाता है। अतः कहा जा सकता है कि समायोजन समस्याएँ वे समस्याएँ होती है जो किसी प्राणी को अपने वातावरण में रहने के लिए सामंजस्य करने में बाधा उत्पन्न करती है और उन बाधाओं द्वारा उत्पन्न हुई समस्या को ही समायोजन समस्या कहा जाता है।

विद्यालय से सम्बन्धित समायोजन समस्याएँ :

किशोर समस्या परिसूची के आधार पर छात्र–छात्राओं की शिक्षा एवं विद्यालय से सम्बन्धित निम्नलिखित समायोजन समस्याएँ हो सकती हैं।

1. किसी विषय विशेष में कमजोर होने के कारण (जैसे अंग्रेजी, गणित, विज्ञान) छात्र अथवा छात्रा हीन भावना महसूस करते हैं और इन विषयों में पिछड़ते चले जाते हैं जिससे उनका शिक्ष का स्तर प्रभावित होता है।
2. हीन भावना के कारण ही छात्र–छात्राएँ विद्यालय की विभिन्न गति विधियों में भाग लेने से कतराते हैं। स्कूल/कॉलेज की किन्हीं पाठयान्तर क्रियाओं में भाग लेने का औसत सामान्यतः अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं का निम्न रहता है।
3. शिक्षकों का व्यवहार भी कई बार समायोजन समस्या को जन्म देता है शिक्षकों द्वारा उपहास किया जाना, व्यंग्य पूर्ण शब्दों का प्रयोग किया जाना, असहयोगात्मक रवैये के अपनाए जाने के कारण एवं व्यर्थ की आलोचना किये जाने पर अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं में हीनता की भावना उत्पन्न होती है। विद्यालय का जो सहयोग उनके व्यक्तित्व के विकास में होना चाहिए वह नहीं हो पाता है।
4. अनुसूचित जाति से संबंधित होने का पता चलने पर दूसरी जातियों के छात्र–छात्राओं द्वारा अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं के साथ पक्षपात पूर्ण व्यवार किया जाता है।

सामाजिक समायोजन से सम्बन्धित समस्याएँ :

अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं की समाज से सम्बन्धित निम्नलिखित समायोजन समस्याएँ हो सकती हैं।

1. प्राचीनकाल से ही अनुसूचित जाति (शूद्रो, दलित) को हेय दृष्टि से देखा जाता रहा है, उस समय इनकी शिक्षा आदि को लेकर उन पर प्रतिबंध लगाया जाता था। ऐसा कहा जा सकता है कि प्रारंभ से इनका सामाजिक स्तर निम्न रहा है। वर्तमान समय में समाज में जागृति आयी है, परन्तु आज के समय में भी जो सम्मान इन्हें समाज में मिलना चाहिए था उसके लिए अनुसूचित वर्ग अभी भी संघर्षरत है।

चूंकि पुराने समय से ही अनुसूचित जाति वर्ग दबा–कुचला रहा है। अतःवह मानसिकता वर्तमान समय में भी लोगों के मस्तिष्क पर अंकित है। खुद अनुसूचित वर्ग भी इस मानसिकता से उबर नहीं पाया है। इसी कारण आज भी अनुसूचित जाति से सम्बन्धित लोग चाहे वह छात्र–छात्राएँ ही क्यों न हो हीन भावना का शिकार है। अभी भी वो अपने आपको समाज से अलग रखना ही पसन्द करते हैं। यही कारण है कि समाज में अनुसूचित वर्ग भली प्रकार से समायोजित नहीं हो पाया है।

2. छात्र–छात्राएँ अपने निम्न आर्थिक स्तर के कारण भी हीन भावना का शिकार रहते हैं। वे सभी सुख–सुविधाएँ जो अन्य जाति के छात्र–छात्राओं के पास होती है। उससे वो वंचित रहते हैं।

भावात्मक समायोजन से सम्बन्धित समस्याएँ :

किशोर समस्या परिसूची के आधार पर अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं को उनके भावात्मक रूप से समायोजित होने में निम्नलिखित समस्याएँ आती हैं–

1. हीन भावना के कारण छात्र–छात्राओं को व्यर्थ के भय सताते रहते हैं वे अपनी शारीरिक संरचना, सुन्दरता, पहनावे आदि को लेकर चिंतित रहते हैं। उन्हें दूसरों की तुलना में अपनी सभी विशेषताएँ कम लगती है।
2. कभी–कभी ये भय, चिन्तायें इतनी अधिक बढ़ जाती हैं कि अवसाद का रूप ले लेती है। हर समय निराशा उन्हें घेरे रहती है।
3. छात्र–छात्राएँ अपने भविष्य को लेकर अधिक चिंतित रहते हैं। प्रायः अनुसूचित जाति के परिवारों के पास आर्थिक स्रोत सीमित होते हैं। जिस कारण कई बार उनकी इच्छाएँ आकाक्षाएँ पूर्ण नहीं हो पाती है और वे भग्नाशा का शिकार होते हैं।
4. हीनता की भावना के कारण ही वे अपने प्रयासों में पूर्ण रूप से प्रयत्नरत नहीं हो पाते हैं असफल होने की भावना से चिंतित रहते हैं। उन्हें ऐसा भय सताता रहता है कि वे अपने कार्यों में सफलता अर्जित कर पायेंगे अथवा नहीं।

उपरोक्त समस्याएँ किशोर समस्या परिसूची को अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं पर प्रशासित करने पर प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर ज्ञात हुई है। ये समस्याएँ परिवार, समाज, शिक्षा और भावात्मक समायोजन से सम्बन्धित है उपरोक्त सस्याओं के कारण ही अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं को समायाजन में समस्याएँ आती हैं।

शिक्षकों अभिभावकों द्वारा चिन्हित अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं की समायोजन समस्याएँ :

शिक्षकों अभिभावकों से प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं की निम्नलिखित समायोजन समस्याएँ ज्ञात हुई है।

1. परिवार से सम्बन्धित समायोजन समस्याएँ।
2. शिक्षा से सम्बन्धित समायोजन समस्याएँ।
3. सामाजिक समायोजन से सम्बन्धित समस्याएँ।
4. भावात्मक समायोजन से सम्बन्धित समस्याएँ।

किशोर समस्या परिसूची के आधार पर चिन्हित अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं की समायोजन समस्याओं के निराकरण हेतु छात्र–छात्राओं द्वारा सम्भव सुझाव :

परिवार से सम्बन्धित समस्याओं के निराकरण हेतु सुझाव :

1. अधिकांश छात्र–छात्राओं का मानना है कि माता–पिता द्वारा अपने बच्चों में अन्तर किया जाता है। इस समस्या के निराकरण हेतु माता–पिता को चाहिए कि वे अपने सभी बच्चों को समान समझे उनमें अन्तर न करें। किसी एक को विशेष दुलार एवं दूसरे को केवल फटकारने पर दोनों ही प्रकार के बालक पूर्ण रूप से अपने आपको समायोजित नहीं कर पायेंगे। इससे उस बालक के मन में जिसे सदैव डांट–डपट मिलती है, नकारात्मक विचार उत्पन्न हो जायेंगे। इसे उसमें हीनता की भावना आ जायेगी, उसमें आत्मविश्वास की भी कमी हो जाएगी। वह किसी भी प्रकार से अपने आपको समायोजित नहीं कर पायेगा।

ठीक इसी प्रकार से माता–पिता को अपने लड़के एवं लड़कियों में अन्तर नहीं करना चाहिए, उन्हें इस बात का एहसास होना चाहिए कि लड़कियाँ किसी भी प्रकार से लड़कों से कम नहीं होती है। लड़कियों को भी लड़कों के समान शिक्षा के अवसर मिलने चाहिए केवल शिक्षा ही नहीं उन्हें प्रत्येक क्षेत्र में समान अवसर मिलने चाहिए।

2. छात्र–छात्राएँ परिवार के वातावरण के ठीक न होने की समायोजन में एक प्रमुख समस्या मानते हैं। उनके अनुसार परिवार के प्रत्येक सदस्य विशेष रूप से माता–पिता का यह कर्त्तव्य है कि परिवार का माहौल सौहार्दपूर्ण एवं गरिमामय हो उन्हें अपने बच्चों में व्यर्थ के भय विकसित नहीं करने चाहिए। उन्हें अपने बच्चों पर नजर तो रखनी चाहिए परन्तु बात–बात पर उनके मामलों में आवश्यकता से अधिक

दखलंदाजी नहीं करनी चाहिए घर में नियन्त्रित स्वतन्त्रता होनी चाहिए। माता–पिता एवं बच्चों दोनों की उम्र में बहुत अधिक अन्तर होता है अतः उनके विचारों में भी अन्तर होता है। दोनों को एक दूसरे के विचारों का सम्मान करना चाहिए।

माता–पिता द्वारा बच्चों को नकारा नहीं जाना चाहिए बल्कि सदैव कुछ अच्छा करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

उपरोक्त सुझावों को अपना कर छात्र–छात्राओं की पारिवारिक समायोजन की समस्या को बहुत हद तक दूर किया जा सकता है।

छात्र–छात्राओं द्वारा शिक्षा से सम्बन्धित समस्याओं के निराकरण हेतु सुझाव

1. विद्यालय एक ऐसा स्थान होता है, जहाँ पर कोई भी व्यक्ति अपनी समस्त आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति कर सकता है। विद्यालय शिक्षा का मन्दिर होता है, जहाँ पर ज्ञान प्राप्त करके व्यक्ति अपने जीवन के विभिन्न लक्ष्यों को प्राप्त करता है। यदि कोई छात्र अथवा छात्रा अपने आपको विद्यालय में समायोजित नहीं कर पायेंगे तो उनका पूर्ण रूप से विकास नहीं हो पाएगा।

   बहुत से छात्र–छात्राओं का ऐसा मानना है कि ऐसे कई शिक्षक होते हैं जो अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं के प्रति संकीर्णय विचार रखते हैं इस समस्या के निराकरण हेतु सबसे पहले शिक्षकों को अपनी संकीर्ण मानसिकता से ऊपर उठना होगा। शिक्षक किसी भी जाति विशेष से लगाव अथवा घृणा ना करें। सभी छात्रों को समान रूप से देखें उनके साथ समानता का व्यवहार करें। यदि किसी छात्र को विषय विशेष में समस्या का अनुभव होता है तो वह उस छात्र की पूर्ण रूप से सहायता करें ताकि वह छात्र अथवा छात्रा उस विषय में पिछड़ ना जाए एवं उनमें हीनता की भावना विकसित न हो। शिक्षक सम्पूर्ण कक्षा को समानता का पाठ पढ़ाएं उनमें 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना विकसित करें जिससे सभी छात्र अपने को समान समझे। जाति विशेष के कारण छात्रों में अहंकार अथवा हीनता की भावना न आए।
2. शिक्षक का व्यवहार छात्रों के साथ मित्रतापूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण होना चाहिए। वे छात्र–छात्राओं में पक्षपात अथवा भेदभाव न करें। शिक्षकों को छात्रों में भय उत्पन्न न करके प्रेम एवं अनुशासन द्वारा अपना सम्मान बनाना चाहिए।
3. अधिकांश छात्र–छात्राओं के अनुसार उनके शैक्षिक समायोजन में एक प्रमुख समस्या शिक्षकों द्वारा कक्षा में भली प्रकार से शिक्षण न करना होती है क्योंकि वे अपने घर पर अथवा घर से अलग छात्र–छात्राओं को टयूशन देते हैं और फिर कक्षा में रुचि पूर्ण ढंग से नहीं पढ़ाते हैं। अतः शिक्षक को टयूशन प्रवृत्ति से बचना चाहिए क्योंकि अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राएँ अधिकांशतः मध्यम अथवा निम्न परिवारों से होते हैं जो कि टयूशन की फीस नहीं भर सकते।

छात्र–छात्राओं द्वारा सामाजिक समस्याओं के निराकरण हेतु सुझाव :

1. अधिकांश छात्र–छात्राओं के अनुसार अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं की प्रमुख समस्या उनके सामाजिक मेल–जोल कम होने की होती है और उनके अनुसार इस समस्या के निराकरण हेतु शिक्षक एवं अभिभावकों द्वारा अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं को सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए। उनके सामाजिक मेल–जोल बढ़ाये जाने के प्रयास करने चाहिएं, जिससे उनमें हीनता की भावना का जन्म न हो एवं वे भी समाज का एक कुशल पढ़ा–लिखा एवं सुसंस्कृत वर्ग बन सकें।
2. छात्र–छात्राओं का समस्याओं के निराकरण हेतु एक प्रमुख सुझाव यह है कि इस जाति के छात्र–छात्राओं की सामाजिक समायोजन से सम्बन्धित समस्याओं का हल करने में स्वयंसेवी संस्थाएँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है। ये समाज में समानता का प्रचार–प्रसार कर सकती है। अनुसूचित वर्ग के लिए विशेष समारोह जैसी मेधावी छात्रोंको पुरस्कृत करना, विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन आदि का प्रबन्ध कर सकती है, जिससे इस वर्ग के लोगों में जागरूकता का विकास हो एवं उनमें हीनता की भावना का अन्त किया जा सके।

छात्र–छात्राओं द्वारा भावात्मक समायोजन से सम्बन्धित समस्याओं के निराकरण हेतु सुझाव :

1. बहुत से ऐसे छात्र–छात्राएँ हैं जो कि भावात्मक समायोजन की समस्या को एक प्रमुख समस्या के रूप में देखते हैं। उनके अनुसार अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं में एक विशेष समस्या भावात्मक समायोजन की कमी का होना है। हीनता की भावना के कारण वे अपने प्रयासों में पूर्ण रूप से प्रयत्नशील नहीं हो पाते हैं। इसके लिए –छात्राओं के लिए विद्यालय एवं समाज में मार्गदर्शन एवं परामर्श केन्द्र होने चाहिएं। जहाँ पर ये छात्र–छात्राएँ अपनी समस्याएँ बेझिझक बता सकें एवं जहाँ पर उनकी समस्याओं का सही हल हो सके।
2. लगभग सभी छात्र–छात्राओं ने तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा को, शिक्षा में प्रमुख स्थान देने की आवश्यकता को प्रमुखता दी है, उनका विचार एवं सशक्त सुझाव यह है कि छात्र–छात्राओं को शिक्षा के साथ–साथ तनकीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा भी देनी चाहिए। जिससे वो अपने भविष्य को लेकर चिंतित ना हो एवं भविष्य में अपने रोजगार के अवसर भी प्राप्त कर सकें।
3. अधिकांशः छात्र–छात्राओं का एक सुझाव यह भी है कि शिक्षक एवं माता–पिता सभी को चाहिए कि वे छात्र–छात्राओं में हीनता की भावना खत्म करके उनममें आत्मविश्वास की वृद्धि करें उन्हें विश्वास दिलायें कि यदि ये प्रयत्न करेंगे तो सफल भी अवश्य होंगे।

उपरोक्त सुझाव अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं की समायोजन समस्याओं को दूर करने में बहुत अधिक उपयोगी सिद्ध होंगे। समायोजन समस्याओं का पूर्ण रूप से निवारण करने के लिए जागरूकता होनी जरूरी है। शिक्षक, अभिभावकों एवं छात्र–छात्राएँ यदि जागरूक होंगे तो सम्भवतः समायोजन समस्याओं का पूर्ण रूप से उन्मूलन हो जाए।

पारिवारिक समस्याओं के निराकरण हेतु शिक्षकों एवं अभिभावकों द्वारा सुझाव

1. अधिकांश शिक्षकों का यह मानना है कि अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं की पारिवारिक समस्याओं में मुख्य रूप से आर्थिक समस्या होती है। परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण छात्र हीन भावना से ग्रसित रहते हैं। क्योंकि ना तो वे अच्छे स्कूलों में शिक्षा ग्रहण कर पाते हैं और ना ही कमजोर विषयों के लिए टयूशन आदि का प्रबन्ध कर पाते हैं। परिणामतः वे कक्षा में पिछड़ते चले जाते हैं और हीन भावना का शिकार होते हैं। अतः सबसे पहले अभिभावकों की आर्थिक स्थिति सुधारने हेतु प्रयास करने होंगे। आर्थिक स्थिति सुधारने हेतु ये प्रयास शासन स्तर पर किये जाने चाहिए। अभिभावकों के विचारानुसार सरकार द्वारा ऐसी योजनाएँ विशेष रूप से चलायी जाए जिससे इन्हें रोजगार भी प्राप्त हो, जिससे इनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो। सरकार द्वारा अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं को शिक्षा शुल्क से मुक्त कर दिया जाए, अथवा शुल्क के रूप में बहुत कम धनराशि वसूल की जाए। इस प्रकार के प्रयास न केवल सरकारी बल्कि गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा भी किये जाने चाहिएं। छात्र–छात्राएँ अधिकांशतः गणित विज्ञान एवं अंग्रेजी, जैसे विषयों में समस्त का अनुभव करते हैं, इन विषयों में अधिगम उच्च स्तर का हो इसके लिए विद्यालय में इन विषयों में अतिरिक्त कक्षाएँ चलायी जानी चाहिए।
2. शिक्षकों एवं अभिभावकों के अनुसार समाज कल्याण विभाग द्वारा छात्र–छात्राओं के लिए निर्धारित छात्रवृत्ति की दर में वृद्धि की जानी चाहिए। छात्राओं की छात्रवृत्ति कुछ अधिक होनी चाहिए इससे बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन मिलेगा। अगर संभव हो सके तो प्राइमरी स्तर के समान ही गरीब छात्र–छात्राओं हेतु विद्यालय में उचित पोषण की व्यवस्था की जाए जिससे कुपोष्ण के कारण उनकी शिक्षा व स्वास्थ्य प्रभावित न हो।
3. बहुत से शिक्षक बड़े परिवार होने को छात्र समायोजन में एक प्रमुख समस्या मानते हैं, उनके अनुसार बड़ा परिवार होने के कारण छात्र–छात्राओं को अपेक्षित सुविधाएँ प्राप्त नहीं हो पाती है, इसके लिए जागरूकता लाने के लिए ऐसी बस्तियों में जहाँ पर अनुसूचित जाति से सम्बन्धित परिवारों की बहुलता है वहाँ पर ऐसे कार्यक्रम आयोजित किए जाए जिससे वहाँ के लोग अच्छे स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हो। इन बस्तियों में परिवार नियोजन कार्यक्रम भी बार–बार चलाये जाने चाहिए, ताकि वहाँ के निवासी छोटे परिवारों के महत्त्व को समझ कर अपने परिवार को सीमित कर सके। अनुसूचित

जाति के अशिक्षित अभिभावकों हेतु प्रोढ़–शिक्षा कार्यक्रम चलाये जाने चाहिए, इससे ये न केवल अक्षर ज्ञान कर सकेंगे बल्कि उन्हें इस बात की जाकारी भी हो सकेंगी कि उनकी पारस्परिक कलह बच्चों की शिक्षा के विकास में बाधा उत्पन्न करती है।

4. शिक्षकों का एक प्रमुख सुझाव यह भी है कि अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं के अभिभावकों को शिक्षा के महत्त्व से अवगत करवाया जाए। इस प्रयोगनार्थ सम्बन्धित अधिकारियों और प्रधानाचार्य की उपस्थिति में अभिभावकों के साथ शिक्षकों की बैठक प्रतिमाह आयोजित की जाए। वहाँ पर अभिभावकों को अच्छी शिक्षा के लाभ बताकर इस बात के लिए प्रेरित किया जाए कि वे अपने बच्चों को शिक्षित अवश्य करें। सरकार अथवा शिक्षा संस्थाओं द्वारा ऐसी व्यवस्था की जाए जिससे शिक्षक छात्र–छात्राओं के घरों में जाकर परिवार के सदस्यों को यह समझायें कि वे अपनी लड़कियों के साथ लड़कों की तुलना में भेदभाव बिल्कुल न करें। उन्हें इस बात का विश्वास दिलाया जाए कि अवसर मिलने पर लड़कियाँ, लड़कों से भी अधिक सफलता अर्जित कर सकती है।
5. घर में पढ़ाई के लिए उचित वातावरण न मिलने के कारण कई बार छात्रों द्वारा विद्यालय मध्य सत्र में ही छोड़ दिया जाता है। यदि विद्यालयों में लॉजिंग, बोर्डिंग आदि की व्यवस्था उपलब्ध करायी जा सके, तो छात्र–छात्राओं को अभिप्रेरणा के साथ एक समान रहने के अवसर व वातावरण प्राप्त हो सके तो उक्त अध्ययन को नियंत्रित किया जा सकता है।

अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं की विद्यालय से सम्बन्धित समस्याओं के निराकरण हेतु शिक्षकों एवं अभिभावकों के सुझाव :

1. लगभग सभी शिक्षक एवं अभिभवक कमजोर आर्थिक स्थिति की समायोजन न कर पाने का एक प्रमुख कारण मानते हैं। परिवार की निर्धनता, खर्चीले, पाठ्यक्रम एवं महंगी स्कूल फीस के कारण अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं को विद्यालय में प्रवेश की कठिनाई की समस्या होती है। इस समस्या के निराकरण हेतु छात्रों की आर्थिक सहायता प्रदान की जानी चाहिए। उनके लिए विद्यालय में छात्रवृत्ति की उचित व्यवस्था हो, उन्हें पाठ्य पुस्तकें निःशुल्क प्रदान की जाए। अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं को प्रवेश से सम्बन्धित शुल्क में भी छूट मिलनी चाहिए। इस प्रकार के प्रयास करने से ऐसे छात्र–छात्राओं की शिक्षा को प्रोत्साहन मिलेगा जो कि आर्थिक कारणों से विद्यालय छोड़ने पर मजबूर हो जाते हैं।
2. शिक्षकों एवं अभिभावकों के अनुसार प्राथमिक स्तर से ही कठिन विषयों जैसे गणित, अंग्रेजी, विज्ञान आदि विषयों का शिक्षण, प्रभावशाली होना चाहिए। बेहतर अधिगम से बच्चों के अन्दर हीन भावना नहीं आयेगी। फलस्वरूप वे माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर अच्छी शिक्षा ग्रहण कर सकेंगे। शिक्षक द्वारा ऐसे छात्र–छात्राओं को चिन्हित किय जा सकता है जो किसी विषय विशेष में कमजोर हो ऐसे छात्र–छात्राओं के लिए अतिरिक्त कक्षायें विद्यालय में चलाई जा सकती है जिससे उनका अधिगम बेहतर हो और छात्र–छात्राएँ हीनभावना से ग्रसित ना हो।
3. बहुत से अभिभावकों का मानना है कि अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं को अपने विद्यालय में जिस समस्या का सामना सबसे अधिक करना पड़ता है वह है भेदभाव एवं पक्षपात की समस्या। प्रायः ऐसा देखा जाता है कि अनुसूचित जाति से सम्बन्धित होने का पता चलने पर छात्र अथवा छात्रा के प्रति शिक्षक के व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है। अध्यापक स्वयं अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं को हीन दृष्टि से देखते हैं। उनके साथ वांछित व्यवहार नहीं किया जाता है। कई बार छात्र–छात्राओं द्वारा अच्छे कार्य करने पर भी उन्हें प्रोत्साहित नहीं किया जाता है। बल्कि अध्यापक के इस प्रकार के व्यवहार से छात्र–छात्राएँ हतोत्साहित हो जाते हैं एवं उनमें जीन भावना का उत्पन्न होना स्वाभाविक है। वह एक प्रकार की मनोवैज्ञानिक समस्या है। इस समस्या के निराकरण हेतु सबसे पहले शिक्षक को आत्मावलोकन करना होगा। वह सभी छात्र–छात्राओं को तमाम दृष्टि से देखे उनके साथ पक्षपात न करें, सामान्य व अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं में भेदभाव ना करें। शिक्षकों को समय–समय पर ऐसा प्रशिक्षण दिया जाए जिससे उन्हें अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं की समस्याओं का ज्ञान हो सके एवं शिक्षक उन समस्याओं के प्रति संवेदनशील हो। शिक्षकों को प्रशिक्षण के समय ऐसे उद्देश्य प्रदान किये जाएं, जिससे वो सभी वर्गों जातियों के छात्र–छात्राओं के सर्वांगीण विकास में

उत्तरदायित्व पूर्ण भागीदार बन सके इससे शिक्षक व छात्रों के बीच की दूरी कम होगी। एक कुशल शिक्षक अथवा शिक्षक ही छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नता व समस्या को महसूस कर निराकरण के उपाय कर सकता है। अतः सुयोग्य, कर्मठ, कर्त्तव्यनिष्ठ, संवेदनशील शिक्षक, शिक्षिकाओं का चयन किया जाए एवं ऐसे सफल शिक्षकों को प्रोत्साहित किया जाए। शिक्षक द्वारा भिन्नता का व्यवहार 'अवांछनीय' है तथा ऐसा अपवाद स्वरूप ही है। शिक्षक के लिए सभी छात्र–छात्राएँ एक समान प्रिय है उसमें जातिभेद अथवा लिंग भेद का प्रश्न ही नहीं उठता है।

4. लगभग सभी शिक्षकों एवं अभिभावकों के अनुसार अधिकांशतः छात्र–छात्राओं के सम्मुख उनके कैरियर की समस्या प्रमुख होती है। उनके अनुसार छात्र–छात्राओं की व्यक्तिगत अथवा कैरियर सम्बन्धी समस्याओं को हल करने के लिए उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। छात्र–छात्राओं को उचित मार्ग दर्शन शिक्षकों द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। इसलिए विद्यालयों में परामर्श केन्द्रों की व्यवस्था होनी चाहिए। जो छात्र–छात्राओं की समस्या का भली प्रकार से उन्मूलनकर सके।
5. शिक्षकों एवं अभिभावकों का शैक्षिक समायोजन की समस्या के निराकरण हेतु एक प्रमुख सुझाव यह है कि विद्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रम बार–बार आयोजित किया जाये इन सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सभी वर्गों के छात्र–छात्राओं के समान रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए ताकि उच्च और निम्न वर्ग की छात्र–छात्राओं में आत्मविश्वास, आत्म सम्मान और आत्म निर्भरता की भावना विकसित हो सकेंगी।
6. अधिकांश शिक्षकों और अभिभावकों का मानना है कि विद्यालय के गैर अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं को समभाव की प्रेरणा प्रदान की जाए जिससे वे अपने अनुसूचित जाति के सहपाठियों के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार कर सकें।
7. विद्यालय का छात्र–छात्राओं के समायोजन में एक प्रमुख स्थान है। शिक्षकों एवं अभिभावकों के अनुसार समय–समय पर अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं की शिक्षा उपलब्धि के विषय में सरकार द्वारा प्रत्येक विद्यालय का मूल्यांकन किया जाए, शिक्षा परीक्षा में विशेष उपलब्धि प्राप्त करने वाले छात्रों एवं छात्राओं को पुरस्कृत किया जाए, जिससे वे और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित हो। शिक्षकों व सरकार की अभिप्रेरणा से ही व उनके कठिन परिश्रम से ही कोई भी छात्र–छात्रा उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करते हैं। अथवा सर्वोच्च अंक पाप्त करते हैं। ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है।

शिक्षकों एवं अभिभावकों के अनुसार अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं की सामाजिक समायोजन से सम्बन्धित समस्याओं के निराकरण हेतु सुझाव :

1. अधिकांशतः शिक्षकों एवं अभिभावकों का यह विचार है कि एक विशेष जाति के सम्बन्धित होने के कारण अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का सामाजिक मेल–जोल कम होने की समस्या होती है, जिस कारण छात्र–छात्राएँ सामाजिक उत्सवों में भाग लेने से झिझकते हैं। इस समस्या का पूर्णतः उन्मूलन संभव है। वर्तमान में जातीय बन्धन एवं कठोर सामाजिक नियमों में काफी परिवर्तन आया है। अतः अधिक से अधिक सामाजिक सद्भावना मेल–जोल के अवसर बढ़ाये जाएं, सामाजिक समरसता को प्रोत्साहित किया जाए, ऐसा केवल शिक्षा के प्रचार–प्रसार द्वारा संभव है समाज को शिक्षित किया जाए, समाज के लोगों को जागरूक बनाया जाए। जब हमारा समाज शिक्षित होगा सभी वह सामाजिक भेदभाव जात–पात आदि कुरीतियों के बन्धन से मुक्त हो पाएगा। शिक्षा एवं जागरूकता द्वारा सर्वधर्म समाज की स्थापना की जाए। समय–समय पर ऐसे आयोजन किये जाने चाहिएं जिसमें समाज के सभी धर्म, वर्ग, जातियों के लोग एक साथ एक जगह पर एकत्रित एक–दूसरे के साथ विचारों का अदान–प्रदान करें। इस पुनीत कार्य हेतु सरकार अथवा स्वयंसेवी संस्थाएँ आगे आ सकती है। इस प्रकार के प्रयासों से सामाजिक भेदभाव कम होगा व सामाजिक चेतना जागृत होगी जो कि सामाजिक रूप से निम्न कहे जाने वाले वर्गों के उत्थान हेतु मील का पत्थर सिद्ध होगी।
2. अनुसूचित जाति से सम्बन्धित छात्र–छात्राओं को अभिभावकों के रुढ़िवादी होने के कारण अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उनकी शादी जल्दी हो जाती है। जिससे उनकी शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। शिक्षकों एवं अभिभावकों के अनुसार इस समस्या के निराकरण हेतु संकीर्ण विचारधारा का उन्मूलन करना होगा। समय–समय पर अधिकाधिक शैक्षिक, सामाजिक,

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गोष्ठियों का आयोजन किया जाए। जिससे सामाजिक चेतना का आविर्भाव हो इससे रूढ़िवादी, संकीर्ण व अचेतन व्यवहार में परिवर्तन सम्भव है।

3. गाँव से अध्ययन के लिए आये छात्र–छात्राओं के लिए छात्रावास की समस्या होती है। इसके लिए प्रत्येक विद्याल में छात्रावास हो। छात्र–छात्राओं हेतु छात्रावास अलग–अलग होने चाहिए। इन छात्रावासों में सभी छात्र अथवा छात्राओं को समान रूप से रहने का अवसर प्राप्त हो, ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों के लिए उनके गुण विषयक अंकों तथा लिखित परीक्षा का सम्मिलित आधार लिया जाना चाहिए।
4. अधिकांशतः अभिभावक एवं अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राएँ दोनों ही अपने अधिकारों से अनभिज्ञ होते हैं। सरकार से प्राप्त होने वाली सहायता का भली प्रकार उपयोग नहीं कर पाते हैं। इसके लिए प्रयास शासन को ही करने होंगे। शासन द्वारा अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं को दी जाने वाली सहायता का व्यापक प्रसार किया जाना चाहिए प्रत्येक विकास खण्ड स्तर पर एक जाँच दल गठित किया जाए। जिससे सही व सम्यक् रिपोर्टस विभाग तथा शासन को पहुँचती रहे, दोषी व्यक्ति को दण्डित किया जाए। प्रत्येक वर्ष, प्रति छःमाही विद्यालयों अथवा सार्वजनिक स्थानों में बैठकें आयोजित की जाएं, जिसमें जनपद मण्डल तथा राज्य स्तर के अधिकार ही। इसके साथ–साथ इन बैठकों में छात्र–अभिभावकों व आम जनता की सहभागिता सुनिश्चित की जाए, इन बैठकों के माध्यम से उक्त के सम्बन्ध में कर्त्तव्य एवं अधिकारों की जानकारी प्रदानकी जाए। रेडियो, टेलीविजन आदि के कार्यक्रमों के माध्यम से भी जागरूकता फैलायी जा सकती है, लोगों को उनके अधिकारों के प्रति सचेत किया जा सकता है। उपरोक्त सुझावों एवं प्रयासों को प्रयत्नपूर्वक अमल में लाने पर ही सामाजिक समस्याओं का उन्मूलन हो जाएगा एसं छात्र–छात्राएँ समाज में भली प्रकार से समायोजित हो पाएंगे।

निराकरण :

निराकरण का अर्थ है समस्या का समाधान अथवा उपाय परन्तु निराकरण वास्तविक अर्थ है समस्या के कारण को पहचानना, पहचान कर उस कारण का उन्मूलन करना। हिन्दी शब्द कोष में निराकरण का अर्थ समाधान, उन्मूलन या किसी समस्या के हल करने से लिया गया है। जब प्राणी अपनी विभिन्न प्रकार की क्रियाओं प्रतिक्रियाओं द्वारा किसी समस्या का समाधान या हल खोज लेता है तो वह उसका निराकरण कहलाता है। किसी भी प्राणी को अपने वातावरण की परिस्थितियों में सामंजस्य करने में विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। सामंजस्य करने मे की गई विभिन्न क्रियाओं द्वारा वह अपने मार्ग में आने वाली उन बाधाओं, समस्याओं का अनेक प्रकार से समाधान करने का प्रयत्न करता है और अपने प्रयत्न द्वारा जब वह उन समस्याओं का उन्मूलन या समाधान ढूँढ लेता है तो वह अपने वातावरण में समायोजित हो जाता है।